सूखे / शुष्क दौर के लिए क्या करें और क्या न करें

करने योग्य :

- चेतावनी, अपडेट और निर्देशों के लिए रेडियो सुनें, टीवी देखें और समाचार पत्र पढ़ें ।
- वर्षा जल संचयन का अभ्यास करें ।
- बरसात से पहले स्थानीय जल निकायों की मरम्मत और कायाकल्प करना ।
- भूजल तालिका को बढ़ाने में मदद करने के लिए गहरे गड्ढे खोदें।
- जल संरक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना ।
- घास और पौधों को पानी देने के लिए घरेलू इस्तेमाल किए गए पानी का उपयोग करें ।
- नहाने के लिए शॉवर की जगह बाल्टी का इस्तेमाल करें ।
- बहते पानी का उपयोग करने के बजाय फर्श को साफ करने और साफ़ करने के लिए गीले कपड़ों का उपयोग करें ।
- ऐसे शौचालयों का निर्माण करना जिसे फ्लशिंग के लिए कम पानी की आवश्यकता होती है।
- रिसाव को रोकने के लिए टैंक, नल आदि की नियमित जांच करें ।
- जितना संभव हो पानी का पुन: उपयोग करें ।
- जीवन शैली में अनुकूल जल संरक्षण प्रथाओं को अपनाएं । पानी के उपयोग पर सभी राज्य और स्थानीय प्रतिबंधों का पालन करें, भले ही आपके पास एक निजी कुआँ हो (भूजल स्तर सूखे से भी प्रभावित होता है) ।
- सुबबुल, सीमारुबा (लेज़रुबा), कसूरीना और नीलगिरी के साथ वनीकरण को प्रोत्साहित करें ।
- जेट्रोफा और पोंगोमिया जैसे जैव डीजल वृक्षारोपण को बढ़ावा देना ।

क्या न करें :

- पानी बिल्कुल भी बर्बाद न करें ।
- पेड़ों और जंगलों को न काटें।
- छतों पर एकत्रित बारिश के पानी को बर्बाद न करें, आदि।
- पारंपरिक जल स्रोतों जैसे तालाबों, बांधों (एनीकट्स) , कुओं, टैंकों आदि के साथ खिलवाड़ न करें ।

- ब्रश करते, दाढी बनाते समय, बर्तन, कपड़े आदि धोने के दौरान बहते पानी का उपयोग न करें ।
- किसी घरेलू काम के लिए हाथ की नम्य पाइप का उपयोग करने से बचें ।

कृषि में सूखे / शुष्क दौर के लिए क्या करें और क्या न करें

करने योग्य :

- वर्षा जल संग्रहण करना । खेत तालाब, सामुदायिक टैंक, जल संभर और पूल जैसे जल संचयन अभ्यास जीवन रक्षक साबित हो सकते हैं ।
- बरसात से पहले स्थानीय जल निकायों की मरम्मत और कायाकल्प करना ।
- सूखा प्रतिरोधी / कम पानी की तीव्रता वाली फसल की किस्मों / पौधों का उपयोग करें ।
- मिट्टी की नमी को बचाने के लिए सूखा-सहिष्णु घास, झाड़ियाँ, पेड़ लगाएं ।
- सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर विधि / ड्रिप सिंचाई विधि का उपयोग करें; शाम के समय फसलों की सिंचाई करें।
- जल संरक्षण के उपाय करना ।
- उपलब्ध जल संसाधनों से सिंचाई सुविधाओं की व्यवस्था करना ।
- खेतों से खरपतवार निकाल दें । उन खरपतवारों का उपयोग पानी की कमी से बचने के लिए मल्चिंग के लिए किया जा सकता है । मृदा नमी संरक्षण के लिए निराई-गुडाई करें या मिट्टी धूल मल्च बनाने के लिए अंतरवर्तीय संक्रियाएँ करें, खरपतवार हटाएँ और मृदा सतह पृष्ठ भाग तोड़े दें ।
- उपयुक्त फसल पैटर्न के साथ ऋतु के दौरान मॉनसून के देर से आरंभ होने/शुष्क दौर की स्थिति में आकस्मिक योजना तैयार करना ।
- लघु अवधि और अपेक्षाकृत कम पानी की आवश्यकता वाली फसलों अल्पावधि किस्मों वाले बीजों की उपलब्धता की व्यवस्था को सूखाग्रस्त क्षेत्रों में प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है ।
- तत्काल वितरण के लिए अच्छी तरह से गुणवत्ता वाले बीजों को स्टॉक करें ।
- किसान मल्चिंग, खरपतवार नियंत्रण, अंतरवर्तीय संक्रियाएँ (इंटरकल्चरल ऑपरेशन) आदि जैसी प्रथाओं का विकल्प चुन सकते हैं ।
- सुबबुल, सीमारूबा, कैसुरिना और नीलगिरी के साथ वनीकरण का प्रोत्साहन ।
- गुणवत्ता वाले चारे और पशु शिविरों की उपलब्धता सुनिश्चित करना ।

- चूसने वाले कीटों के नियंत्रण का ध्यान रखें; आईपीएम के साथ कीट और कीट की घटनाओं को नियंत्रित / कम करना ।
- किसानों को फसल बीमा कराने के लिए प्रोत्साहित करें चाहे वे ऋणी हों या नहीं ।
- शुष्क दौर के दौरान नाइट्रोजन उर्वरकों और सूक्ष्म पोषक तत्वों का फोलियर स्प्रे शुष्क स्थितियों में पसल को सुरक्षितता और सहनशीलता को बढ़ाता है ।
- कपास जैसी चौडी पंक्ति की फसलों में स्किप सिंचाई अपनाएँ ।
- मिट्टी से नमी के वाष्पोत्सर्जन को कम करने के लिए पौधों की आबादी को कम करें ।
- जहाँ आवश्यक हो, कैओलिन (6%), साइकोसेल (0,03%), फेनिल मरक्यूरिक एसिड (पीएमए) जैसे एंटीट्रान्सपिरेंट्स का स्प्रे करें ।
- उर्वरक की खुराक कम हो सकती है या इसके अनुप्रयोग में देरी हो सकती है ।
- स्वस्थाने पद्धति जैसे खेत समतलीकरण, बांध बनाना, ट्रेंच बनाना, वेदिकाकरण और परती जुताई से पानी और शीर्ष मिट्टी के अपवाह नुकसान को रोकें ।

क्या न करें:

- पानी की उच्च तीव्रता वाले बीज / फसलों का उपयोग न करें; सुबह के समय फसलों की सिंचाई न करें ।